



# इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

## सामान्य अध्ययन / GENERAL STUDIES

निर्धारित समय: 3 hour  
Time Allowed:

अधिकतम अंक 300  
Maximum Marks

नाम. Name: Kr. Akanksha Goshwal

मोबाइल नं. Mobile No: 97 03837099

ई-मेल पता. E-mail Address akankshagoshwal14@gmail.com

रोल नं. Roll No: \_\_\_\_\_ दिनांक (Date) 9/01/2021

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam) हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature) Akanksha

### प्रश्न - पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें :

- इसमें 3 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
- प्रश्नों में शब्द सामा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
- उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

### Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

- There are 3 question and all the questions are compulsory.
- The Number of marks carried by a question/part is indicated against it.
- Answer must be written in the medium authorized in the admission certificate which must be started clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) booklet in the space provide.  
No marks will be given for answer written in a medium other than the authorized one.
- Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained) \_\_\_\_\_

टिप्पणी (Remarks) \_\_\_\_\_

प्रश्न संख्या

उचित परिभाषित कर कारण दे तापमान बिहायट के

1 A तापीय प्रतिरोधक से तापमान जब ऊंचाई से वृद्धि के साथ तापमान में कमी के स्थान पर वृद्धि हो। यह सामान्यतः अल्पवायु परिवर्तन का प्रभाव है।

B जब किसी क्षेत्र विशेष में कृषि के अलावा पशुपालन, चारागाह जैसी क्रियाएं भी संचालित हो, मिश्रित कृषि कहते हैं।  
- लाभ: उत्पादन वृद्धि, उर्वरता वृद्धि, किसान काय वृद्धि

C आपदा प्रबंधन से संबंधित शब्दानुकी है। आपदा प्रदान उठाये जाने वाले कदम हैं जिसमें स्वास्थ्य, श्रम, संबंधी एवं आपदा पूर्व स्थिति कोन का प्रथम क्रिया जाता है।

D

E जेट स्ट्रीम पवने क्षोभमण्डल से समताप मंडल में प्रवाहित सामान्यतः दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर प्रसार: उपोष्ण कटिबंधीय पट्टा जेट स्ट्रीम भाग है।

F रिक्त अंतरण की अंतिम अवस्था है वर्षाजल तेज बहाव से नाकिपां चाँड़ी एवं गहरी हो जाती है।  
- कृषि योग्य भूमि नहीं रहती है।

यह एक प्रकार की गति विरचना है

C

एन्ड्रोसोसैला - पृथ्वी तक पहुंचने वाले प्रापमान की कुछ मात्रा वातावरण में परिवर्तित कर देता।

H

जम्बुक नदी पर अवस्थित बांध है

I

प्रमुख जिले - मंडसौर, नीमच आदि

म.प्र. में सिंगरि नगर प्रबंधन हेतु कानि कायदा 1988।

J

भ्रंश धारियों के बीच स्थित पर्वत श्रृंखलाएँ पर्वत कहलाते हैं जो अपेक्षाकृत ऊँचे होते हैं

K

उदाहरण - विन्ध्याचल पर्वत

L

उत्तराखण्ड के अन्तर्गत नदियाँ डेल्टा का निर्माण नहीं करती हैं। प्रमुख नदियाँ - गण्डक, तापती आदि।

2

M

हिमालय पर्वत निर्माला से पूर्व शरणाग है जिसके समग्र कालीन पर्वत पश्चात हिमालय की उत्पत्ति हुई मानी जाती है।

Y

N

यह निम्न वायुदाब का क्षेत्र है जिसके स्वामंत्र्य एवं विद्युत से मौसमी परिवर्तन देखे जाते हैं।

P

O

क्षेत्र विशेष में फसल उत्पादन हेतु निश्चित काल में खेती की जाती है ताकि शीघ्र ही उत्पादन किया जा सके।

R

S

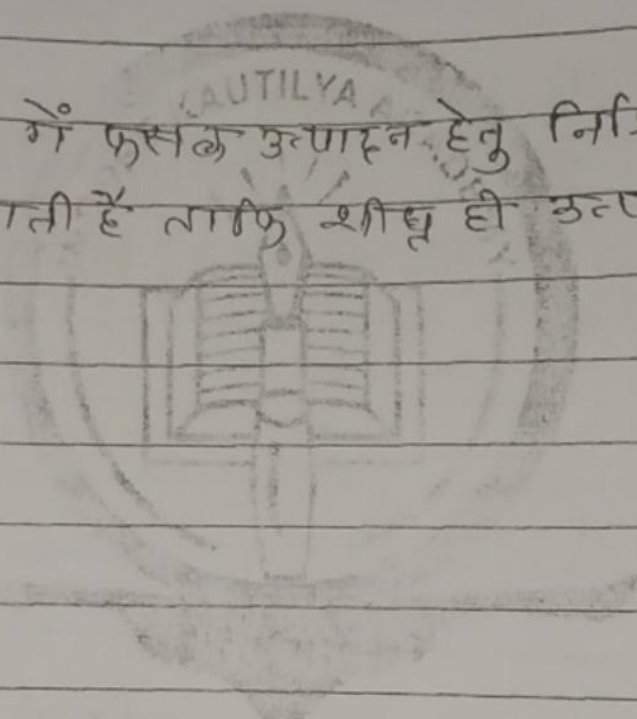
T

U

V

W

X



इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पत्रिका  
(Mains Answer Sheet)

2 A

भारत कोयला भण्डार को दृष्टि से एक हीपका समूह है जो विश्व में उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है।

भारत में कोयला उत्पादित राज्य मुख्यतः दुनीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल हैं।

- दुनीसगढ़ - कोरवा खदान, लुग, बैजाडीला
- उड़ीसा - बस्तर क्षेत्र

शुद्ध सम।  
दरारि

पूर्वी पठार का होरा नामपुर का पठार -

- झारखण्ड - सिंदभूम जिला
- कर्नाटक - शिमोगा आदि प्रमुख कोयला उत्पादित क्षेत्र हैं। इन संचित कोयले का विद्युत उद्योग में उपयोग किया जाता है।

(2)

इस प्रश्न में New pattern के अनुसार उत्पादन व क्षेत्र और दी

B

पेट्रोलियम एक अत्यंत आवश्यक व अत्यावश्यक वस्तु है। भारत में पेट्रोलियम के भण्डार सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं।

- असम का डिब्रुगढ़ क्षेत्र प्रमुख पेट्रोलियम क्षेत्र है।
- मुंबई का बाम्बे हार्ड

इसके अलावा पूर्वी भारत एवं दक्षिण पूर्वी भारत में भी पेट्रोलियम संयंत्रों के क्षेत्र मौजूद हैं जहां खनन कार्य जारी रहता है।

भारत प्रमुख पेट्रोलियम निर्यात देशों जैसे अमेरिका इत्यादि से पेट्रोल का आयात करता है।

Same Requirement Incl 2

(2)

धारावा बढाय

C

D

इवाकाशुरी एक स्थलीय शक्ति। संरचना है जो वृत्त  
 शक्ति का नाव के अंतः प्रती से बहार प्रसफुर्य  
 के बाद निर्मित होता है। इवाकाशुरी द्वारा कई  
 स्थलाकृतियों का निर्माण होता है जिसके  
 अंतर्गत - लेपोलिथ न कोकोलिथ,

(1)

गृह एक अलग प्राकृतिक समाधान है जो वन, कृषि अपरदन, निष्पीकण, क्षरण जैसी लगाव्याएं समाप्त करती है अतः गृह का संरक्षण अति आवश्यक है। संरक्षण व संवर्धन के उपाय :-

- वृक्षारोपण करना।

- कृषि की विभिन्न परतियां - कठोर कृषि, भू-परिष्कार
- जैविक खाद प्रयोग एवं रसायन, डर्वरक सीमित प्रयोग
- आसपास की कृषि पर नियंत्रण जैति - स्थानान्तरित कृषि
- अनियंत्रित पशुचारण पर रोक।
- खेती के आसपास गेदों का निर्माण करना
- शून्य वज्र खेती को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्षतः समुदाय आधारित सहयोग अपनाना।

F उद्योगों के संचालन एवं प्रक्रिया के दौरान कई प्रकार की अतिविधियां लंचाहित होती रहती हैं। इसमें उनकी कुछ अतिवर्ती एवं पूर्ववर्ती आवश्यकताएं होती हैं जो निम्न हैं :-

1) अ पूर्ववर्ती आवश्यकता :- अच्छे माल्य का समुचित प्राप्ति

- उपकरणों संबंधी आवश्यकताएं
- क्षमिक प्रशिक्षण व अन्य।

उचित परिभाषा दे।

2) अगुवर्ती आवश्यकता :- निमित्त उत्पाद की समुचित पैकेजिंग व भानकीकरण।

परिग्रह न लगव्या सुगम ताकि उत्पाद नुकसान न हो।  
निष्कर्षतः सरकारी नीतियों व प्राकृतिक प्रणालियों से उद्योगों की समाप्त आवश्यकताएं पूरी हो सकती हैं।

6

कृषि, पौधों, पशु मवेशी कच्चे माल की विभिन्न उद्योगों से उत्पाद निर्मित कर उद्योगताओं तक पहुंच सुनिश्चित करना ही खाद्य प्रसंस्करण है।

• भारत में यह उद्योग पान्चवर्षीय सबसे बड़ा उद्योग है जो 13 मिलियन लोगों को प्रत्यक्ष एवं 30 मिलियन लोगों को अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार उपलब्ध कराता है।

उपयोगिता: • दूध, दही, मक्खन जैसे उत्पाद उत्तरजीविता • महिला सशक्तिकरण में सहयोगी

• नियतिका 14-15 एवं जीडीपी में 12% का योगदान • कृषकों की आय में वृद्धि में सहायक

• ग्रामीण रोजगार वृद्धि एवं कुपोषण में कमी।  
निष्कर्ष: सम्पदा योजना, भेगा फूड पार्क जैसे प्रयासों

भारत में लगभग 60 से 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। ऐसी स्थिति में कृषि को खाद्य का अहम साधन एवं सफल बनाने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए परन्तु कुछ समस्याएं उत्पन्न हैं जो निम्न हैं:

7

1) कृषि योग्य सिंचित क्षेत्र की कमी।

2) कृषकों के पास आधुनिक मशीनों का अभाव।  
3) अमानसून अनिश्चितता एवं जलवायु परिवर्तन।

4) श्रद्धा की सही पहचान न होने से उत्पादन में कमी।

5) महंगे मूल्य, विचौंकियों से कृषक शोषण

6) सिंचाई की अनसूझणीयताओं का अभाव व जागरूकता

निष्कर्ष: कृषि को सफल बनाने हेतु इसे आधुनिक एवं उत्पादित कृषि बनाए जाने की जरूरत है।



कौह इस्पात उद्योग भारत का एक अहम मशीनीकृत उद्योग है। भारत कौह अयस्क खनन एवं उत्पादन में विश्व में अहम राष्ट्र है। जहाँ मध्यप्रदेश के पूर्वी क्षेत्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमबंगाल आदि राज्य कौह अयस्क खनन राज्य है।

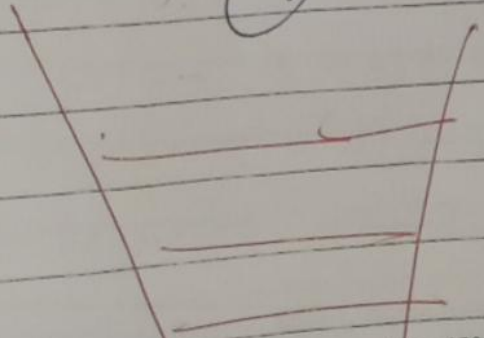
1

KAUTILYA

पृथ्वी की आंतरिक संरचना को समझने एवं जानने का कोई सीधा मार्ग नहीं है। अतः धनत्व, तापमान आदि मापदंडों से आंतरिक संरचना की जानकारी शामिल होती है। इसके अन्तर्गत - कोड, क्रस्ट एवं ऊपरी सतह शामिल है। कोड एक तरल मैग्मा युक्त स्थान है जहाँ से मैग्मा ऊपरी सतहों की ओर आता है।

इसे MAP  
भाव्य है।

2



with - गरम है।

प्रश्न

संख्या

1

कृषि को सफल बनाने हेतु सिंचाई एक महत्वपूर्ण कार्य है। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई के माध्यम से खेती की जाती है व तबमें कई प्रकार के सिंचाई प्रणाली को अपनाया जाता है;

1)

1) काल्वारा सिंचाई: खेतों में पाइपों के छेदों से फव्वारों के माध्यम से सिंचाई।

2)

2) टपकन सिंचाई: नियंत्रित तरीके से पाइपों से एक-एक छेद से सिंचाई परन्तु कृषि संकरीकरण, पाइप कटाव जैसी

3)

3) उप-सतही सिंचाई - सतह के नीचे पाइपों के माध्यम से सिंचाई, मृदा में अभी बनी रहती है।

4)

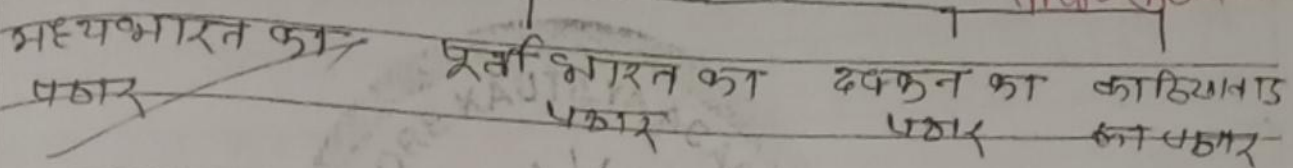
4) चक्रीय सिंचाई: खेतों में चक्रीय पंपों के माध्यम से पानी दूर क्षेत्रों तक पहुँचा सुनिश्चित।

L

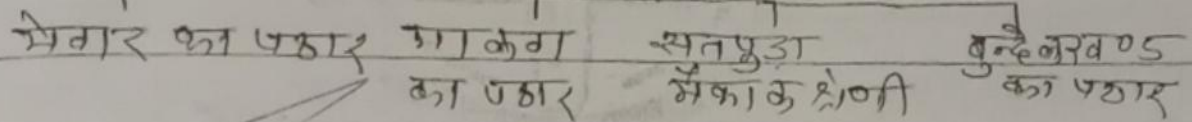
प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र भारत का अत्यधिक विविधतामय क्षेत्र है जो वि. दृश्य क्षेत्रों के कारण अत्यधिक विविधता से विभाजित होना है। यह क्षेत्र विभिन्न भू-व्यापक क्षेत्रों में विभाजित है।

प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र

use A map to illustrate



मध्य भारत का पठार : प्रायद्वीपीय पठार का यह क्षेत्र अनेक उच्चतम व भू-व्यापक क्षेत्रों से युक्त है। इसके अन्तर्गत



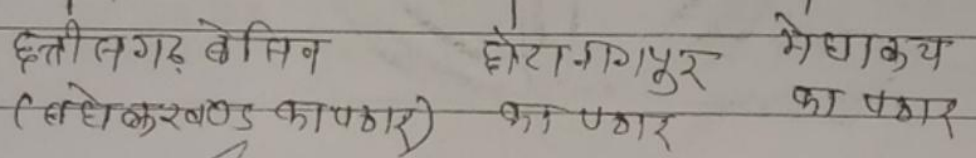
मालवा का पठार मुख्यतः राजस्थान, गुजरात में विस्तारित है जो विन्ध्य रेंज पर्वत श्रेणी को मालवा पठार से विभाजित करती है। वही मालवा का पठार बसाल्ट चट्टान से निर्मित संरचना है जहां मुख्यतः कांजी मिट्टी का विकास हुआ है। जिससे कपास उत्पादन में अत्यन्त क्षेत्र है।

मालवा के पठार की अत्यन्त उर्वरता है एवं मुख्यतः गेहूँ, ज्वार जैसी फसलों का उत्पादन होता है। मध्य प्रदेश में इंदौर, नागदा, धार, बालासोर आदि प्रमुख शहर।

क्षेत्र हैं। समझें।

सतपुड़ा मैदानी क्षेत्री एक प्रमुख वन संपदा युक्त क्षेत्र है जहाँ सतसे ऊँची जोड़ी धूपगढ़ - महादेव पर्वत में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी में उपस्थित हैं। बुन्देलखण्ड का पठार श्रेणावर व नीलचट्टान से निर्मित स्थलाकृति है जहाँ काक-पीकी मिट्टी का विकास हुआ है। इस पठार के पूर्व में होरा नागपुर का पठार अवस्थित है।

पूर्वी भारत का पठार: स्वनिज संसाधन संपन्न एवं जैवविविधता से युक्त इस पठार को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है -

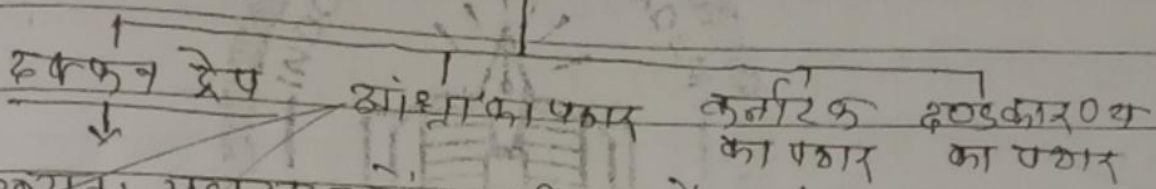


बुन्देलखण्ड का पठार मुख्यतः हत्तीसगढ़, पूर्वी मध्य व उड़ीसा में विस्तारित है यह स्वनिज संसाधन संपन्न क्षेत्र है।

होरा नागपुर का पठार हत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड पश्चिम बंगाल, में विस्तारित है। इस पठार की सबसे बड़ी नदी दामोदर है जो इस पठार से प्रवाहित होकर पश्चिम बंगाल से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अलावा स्वर्णरेखा नदी के अपनाह क्षेत्र का संबंध भी इसी पठार से है।

इस पठार को रांची का पठार, हजारीबाग का पठार व पधुर मात्रा में है एवं खनिज समाधान सम्पन्न क्षेत्र होने के बावजूद उद्योगों का विकास नहीं हुआ है एवं यह एक पिछड़ा इलाका क्षेत्र है।

मेघालय का पठार मुख्यतः गारो, शाली एवं जयंतिया पहाड़िया से युक्त है जहां शाली पहाड़ी में चोयप्रेजी स्थान पर मासिमरार सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है।



मुख्यतः महाराष्ट्र में अवस्थित है जहां सतमाळा, अजन्ता, काकोघाट एवं हरिश्चन्द्र शीठियां अवस्थित हैं। हरिश्चन्द्र की सबसे ऊंची चोटी कुल्लुबाई है।

• कर्नाटक का पठार मुख्यतः मलनाड व निम्न मैदान में विभाजित है जहां काकाबुदान सबसे ऊंची चोटी है।

• दण्डकारण्य का पठार - मुख्यतः उड़ीसा, झारखण्ड में विस्तारित है। ब्रह्मपुत्री नदी के अपवाह क्षेत्र का सीतंध इसी पठार से है। रिन, तांवा, कोह अयस्क संबंधित धातु यहां पाई जाती है परन्तु यह एक सूखा ग्राम क्षेत्र है जहां कृषि संबंधित क्रियाएं सीमित हैं।

निष्कर्षित प्रायद्वीपीय पठार खनिज, जलविद्युत, उद्योगों की दृष्टि से सम्पन्न है क्षेत्र है।



1) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में किंगडम

- प्रजनन दर 2.1 तक लेकर आना।
- मंचायत, ग्राम सभा के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता में शक्ति करना।
- शिशु मृत्यु दर में कमी करना
- सवजात शिशु मृत्यु दर में कमी करना।
- स्वास्थ्य सुविधा विस्तार एवं प्रजनन सुविधा में विस्तार के साथ जनसंख्या संकुचन का प्रयास करना।

इस राष्ट्रीय नीति के अलावा महय प्रोफेसर्स की जनसंख्या नियंत्रण नीति, 2011 का अनुसरण किया जा रहा है।

(3)

||

~~प्रश्न की प्रकृति अनुसार शब्द सीमा बढ़ायें।~~

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

- 1 A विशाल मैदानों में जलोढ़ भूदा से निर्मित भूमि को सम्राप मैदान कहा जाता है।  
- यह कृषि हेतु उपयुक्त एवं उपजाऊ होते हैं।
- 2 B उत्तर भारत में ग्रीष्म ऋतु के समय चलने वाली झूलन धूलों को लू कहा जाता है। तापमान 40°C पर मुख्यतः उत्तर एवं उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में प्रवाहित होती है - जैसे - दिल्ली राजस्थान आदि।
- C कौन्डेरा एक ज्वालामुखी से निर्मित लवणशुद्धि है।
- D समुद्री क्षेत्र में प्रवाल किनारों के क्षरण अर्थात् उनके रंग परिवर्तन को विरंजन कहा जाता है।  
कारण: जलवायु परिवर्तन, समुद्री शूण्डण आदि।
- E रिफर घाटी एवं विशाल होमीय पर्वत श्रृंखला के महत्व विषय सीकरा क्षेत्र है।
- F पश्चिम महासागर का कठिन वलय - स्ट्रॉन्टोकी ज्वालामुखी को कहा जाता है जो एक एक प्रमुख ज्वालामुखी है।



Note ) 3 marks में परिभाषा न बताये  
अनावश्यक only use 3 marks  
50 more beeter.

वर्तमान के साथ-साथ जमीनी नीतियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एकत्रिक संसाधन उपयोग एवं समाप्त पूर्ववत् ही धारणीय है प्रवर्धन है।

- यह सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य है।

बृद्धा अपरदन, निष्पत्तिकरण एवं क्षरण की समस्या से ग्रसित भूदा ही समाप्ताग्रत भूदा है।

जैसे - चम्बल के धारी भूदा, नर्मदा धारी भूदा, हिमाचल क्षेत्रीय भूदा आदि।

1986 में यूनेस्को शहर में मानवीय वैज्ञानिक अनुप्रयोग के दौरान धरित परमाणु ज्ञात ही है।

- लगभग 1.5 करोड़ लोग प्रभावित हुए एवं इससे में ग्रहणी

- प्रमुख कारण - मानव कापरवाही

ऐसी सिंचाई प्रणाली जो सीमित जल प्रयोग के साथ अधिकतम फसि उत्पादन एवं भूदा संतुलन में सहायक हो।

उदा - फल्वारा सिंचाई प्रणाली, रस्कन, उपसतही आदि

2

प्रश्न संख्या

प्रश्न संख्या

आग्नीय, लवणीय जल से युक्त मृत वासी क्षेत्र

M

N

O

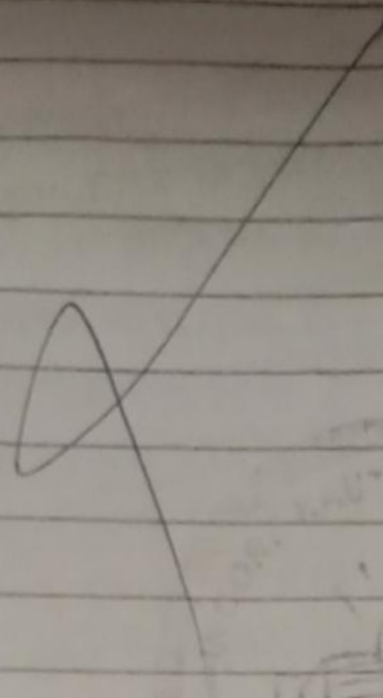
P

Q

महासागर के द्वारा प्रवाहित व बहाव से तट के पास  
बिखरा किण्वण गण निक्षेप हैं जिसमें लवणीय मृदा  
एवं महासागरीय अपशिष्ट शामिल हैं।

संरक्षित - भारत पाकिस्तान के मध्य अवस्थित  
एक विवादित क्षेत्र है जहाँ सदैव सैन्य उपस्थिति रहती  
है। यह क्षेत्र हिमालय <sup>मध्य</sup> पूर्वी क्षेत्र में स्थित है।

2 C



D

पारिस्थितिकी तंत्र मानव व प्रकृति के मध्य एक अहम संतुलनकारी तंत्र है जो मानव की तगम आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परन्तु मानव की आक्रांक्षाओं व अंधाधुन दौड़ से इस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जो निम्नलिखित हैं :

1) 2) 3) 4) 5) 6)

- 1) जैवविविधता का त्याग हुआ है
- 2) जल स्रोत एवं प्रदूषण
- 3) वायु प्रदूषण
- 4) खाद एवं रासायनिकों पर विपरीत प्रभाव
- 5) जलवायु परिवर्तन समस्या
- 6) प्रदूषण नियंत्रण एवं सशुद्धी प्रदूषण

निष्कर्ष: पारिस्थितिकी संरक्षण व संवर्धन अति आवश्यक है।

आवश्यक है।

आपदाग्रस्त जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जनजातों जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इत्यादि से अन्य जनजातियों की तुलना में कमजोर हो एवं जो विभूति का संकट डोक नरु जनजातियों को शामिल किया गया है। इसके अन्तर्गत महाराष्ट्र में तीन-वैगा, सहरिया एवं आरिया आपदाग्रस्त जनजातियाँ हैं जो स्वयं की मुख्य धारा में शामिल होने से काफी दूर हैं। भारत में पूर्वी क्षेत्र की जनजातियाँ, अण्डमाननिकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप आदि क्षेत्र की जनजातियाँ इसी वर्ग में शामिल हैं। सरकार द्वारा इनके उत्थान व संवर्धन हेतु कई प्रयास किए जा रहे हैं।

(2)

~~जनजातियों के नाम देकर  
(vertically list व समस्या को)~~



I भारत में मानसून की शुरुआत मुख्यतः जून के प्रथम साप्ताह में मानी जाती है। जिसके अन्तर्गत गर्मियों के अर्ध-वर्ष के दक्षिण में निम्न वायुदाब का क्षेत्र स्थापित हो जाता है। इसी प्रक्रिया में भारत में मानसून की शुरुआत इससे दक्षिण-पश्चिम मानसून पवने के आगमन के द्वारा होती है एवं मानसून का आगमन होता है।

1) ~~संयुक्त कारण~~  
~~वैकल्पिक कारण~~  
use a map

J बाढ़ एक प्राकृतिक एवं कुछ सीमा तक मानवीय आपदा है जब सैज बढ़ाव से नहीं का अंक सीमाएं काँट कर स्थलीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है तो उसे बाढ़ कहते हैं।  
भारत में बाढ़ प्रसिद्ध क्षेत्र : उत्तर पूर्वी भारत (उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार), दक्षिण पूर्वी क्षेत्र आदि।

समस्या : जनजीवन अस्तव्यस्त, जनश्रवहानि, ध्वंसरचनात्मक हानि, कृषि हानि आदि।

समाधान के उपाय : बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बाँधों का निर्माण

- आपदा से पूर्व ही समुचित प्रयास जैसे - क्षेत्र रक्षा की योजना
  - जनसंख्या वितरण में स्थान देना
  - बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में नदियों के प्रति संवेदनशीलता दिवानी।
- आदि अनेक सरकारी नीतियों व समुदाय सहयोग से बाढ़ निर्माण संभव है।

K टिकाऊ विकास एवं सारणीय एवं सतत विकास का संकल्पना है जिसमें वर्तमान के साथ-साथ पीढ़ी आवश्यकता का ध्यान रखा जाता है। इस हेतु श्याम निम्नकिरित हैं।

- 1) सारणीय कृषि एवं जैविक कृषि को बढ़ाना।
- 2) ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों एवं अल्प मात्रा में अधिक उपयोग करना। (जैसे- सौर, जैव, सफ़ीकरण)

3) सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास 2030

4) सिफिकम में जैविक कृषि से (जैविक राइस) का दर्जा

5) जीरो बजट प्राकृतिक खेती, कुशल सिंचाई प्रणाली

विस्कॉन्सिन सतत विकास हेतु सामुदायिक भागीदारी एवं सफल नीति क्रियान्वयन का आवश्यक है।

L झरावली की पहाड़ियों का विस्तार उत्तर में दिल्ली से लेकर उत्तर पश्चिम में राजस्थान तक विस्तारित है यह राजस्थान बांगर प्रदेश को दक्षिण में आकरा व भेमार के पठार से विभाजित करता है।

झरावली पहाड़ियों की सबसे ऊँची-चोटी गुरुशिखर

1322 मी है यह हिमालयीन श्रृंखला के अन्तर्गत है

सौर पर भवस्थित है जिससे इस क्षेत्र में वर्षा का

अभाव पाया जाता है। यहां से निकलने वाली कूरी

नदी राजस्थान से होते हुए रजभार की खाड़ी में

गिर जाती है इन पहाड़ियों के पूर्व में विहणोचक

पहाड़ियां हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व

उद्योगों का सम क्रिया चा सत्पश्चात स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा औद्योगिक नीतियों के क्रियान्वयन ने उद्योगों की स्थिति को काफी सीमा तक सुधारा है परन्तु वैश्वीकरण क्षेत्र पर एवं ग्लोबल साँग के आधार पर यह औद्योगिक विकास काफी मंद एवं सीमित है।

इस मंद औद्योगिक विकास के अन्तर्गत कच्चा भाक की पर्याप्त आपूर्ति के साथ-साथ कृषि आधारित, वनोपज, खनिज आधारित उद्योग अपनी लफकता शक्ति नहीं कर पा रहे हैं। इस मंद औद्योगिक विकास के कारण निम्नलिखित हैं :-

- 1) ऊर्जा की, अक्षित औद्योगिक नीति का अभाव।
- 2) उद्योगों हेतु उचित वातावरण एवं क्षेत्रों का अभाव।
- 3) उच्चतम तकनीक एवं संसाधनों का अभाव।
- 4) कुशल प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी एवं औद्योगिक श्रमिकों की अनुभवहीनता।
- 5) परिवहन, अवसंरचनात्मक कमी जिसेसे उत्पादन एवं कच्चे भाकों का गुफसान अछिड़ होता है।
- 6) प्रसंस्करण तकनीक एवं वैज्ञानिकता की कमी।
- 7) उद्योग सँवर्द्धन वृद्धाशक्ति का अभाव।
- 8) सरकारी नीतियों, योजनाओं के क्रियान्वयन में अभाव।
- 9) कर प्रणाली जटिलता, निवेश सँबंधी कानून प्रणाली एवं सँबंधी समस्याएँ।



इन तमाम कारणों से उद्योगों की स्थिति व समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संवर्द्धन एवं औद्योगिक विकास में यदि हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं जो निम्न हैं :-

1) औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना।

2) उद्योग संवर्द्धन नीति, 1985

3) डी डगर्ड वीपी परिवर्तन डीपीआईआईटी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।

4) निवेश प्रोत्साहन हेतु, कर संबंधी जरूरतों को कम किया गया है।

5) गुआ योजना - जिनके तहत छोटे लघु मध्यम क्षेत्रीय उद्योगों को ऋण प्रदान किया जाएगा।

6) स्टार्टअप योजना - नवीन उद्योगों के लिए ऋण व शुरुआत हेतु ऋण प्रदान किया जाएगा।

स्टैंडरुप योजना - महिला उद्योगों को प्रोत्साहन के साथ अनुसूचित जाति जनजाति को भी सहयोग

7) प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना - खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को प्रोत्साहन एवं संवर्द्धन हेतु।

8) सूक्ष्म लघु पुरीर उद्योगों की क्षेत्रों में परिवर्तन किया गया।

9) इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं -

इन तमाम कारणों से उद्योगों की दिशाति व समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संतर्कन एवं औद्योगिक विकास में यदि हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं जो निम्न हैं :-

- 1) औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना।
- 2) उद्योग संवर्धन नीति, 1985
- 3) डी ड्राई वीपी परिवर्तन डीपी ड्राई ड्राई टी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।
- 4) निवेश प्रोत्साहन हेतु कर संबंधी जरूरतों को कम किया गया है।
- 5) मुद्रा योजना - जिनके तहत छोटे, लघु, मध्यम क्षेत्री उद्योगों को ऋण प्रदान किया जाएगा।
- 6) सॉल्ट थैप योजना - नवीन उद्योगों के संरक्षण व प्रोत्साहन हेतु ऋण प्रदान किया जाएगा।
- स्टैंड छाप योजना - महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन के साथ अनुपूरित जाति, जनजाति को भी सहयोग प्रदान मंत्री कृषि संपदा योजना - रवायत फसल उद्योगों को प्रोत्साहन एवं संवर्धन हेतु।
- 8) सूक्ष्म, लघु, कुटीर उद्योगों की क्षेत्रों में परिवर्तन किया गया।

इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं -

- 1) महिलाओं में उद्यमिता प्रसार हेतु श्रावणी क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाना।
- 2) उन्नत तकनीक एवं भौगोलिक वातावरण प्रदान किया जाना।
- 3) मूलभूत ऋण एवं जमा बचत की प्रवृत्ति बढ़ाई जा सके।

निष्कर्षतः उद्योगों के संवर्धन व विकास हेतु एक नई भौगोलिक नीति की आवश्यकता है।

8

शेड सीमा  
कम करे।

एन  
एच

C

गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत से तात्पर्य जिसे संसाधन जो एक बार उपयोग होने के पश्चात पुनः संचयन कर उपयोग में लाए जा सकते हैं। ऐसे ऊर्जा के स्रोत जो वर्तमान में असीमित मात्रा में प्रकृति में मौजूद हैं। इन ऊर्जा स्रोतों में - सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जल ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि हैं।

सौर ऊर्जा के अन्तर्गत सूर्य एक असीमित ऊर्जा स्रोत है जिससे असीमित मात्रा में दिन के समय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। पुराने समय में सोलर कुकर जैसे कई उपयोग में लाए जाते थे जो एक शुरुआती कदम था लेकिन वर्तमान में सौर सेल, सौर बूंदरी, सौर संचयन आदि उपकरण सामने हैं जो उन्नत तकनीक से युक्त होने के साथ ही सतत विकास से भी जुड़े हुए हैं।

सौर सेल - के माध्यम से सूर्य प्राप्त ऊर्जा को प्राप्त कर बिजली उत्पादन संभव है यह विद्युत की लघु मात्रा बचत एवं कोपले पर निर्भरता का बेहतर विकल्प है। इसी दिशा में -

ज्वारीय ऊर्जा - सागरीय जल के प्रवाह व बल से निर्मित ऊर्जा है जिसके अन्तर्गत संचयन में लगी रकबा पर सागरीय तरंगों के प्रसार से बि ऊर्जा पैदा की जाती है। इसी प्रकार पवन चक्कियों के माध्यम से पवन ऊर्जा का बेहतर अर्थोपार्जन

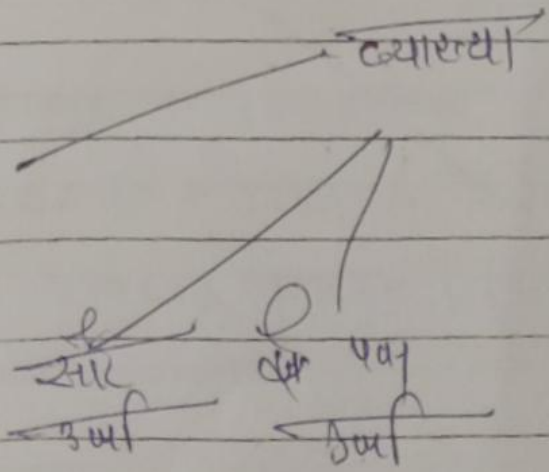
ने इस बंधन के बहाव वाले क्षेत्रों में किया जा सकता है।

इन तमाम नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की वर्तमान आवश्यकता को निम्न बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:

- 1) परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की सीमितता एवं कठोरता उनके स्रोतों के सैं कमी की समस्या।
- 2) सतत विकास लक्ष्यों के अनुपाकन में सहयोगी।
- 3) प्रदूषण नियंत्रण में सहायक।
- 4) परंपरागत स्रोतों को केवल विवाद एवं तनाव से बचाने एवं विकास आधारित दृष्टिकोण के अनुपाकन हेतु।

निष्कर्षतः नवीकरणीय स्रोतों को व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय से अंतरा-राष्ट्रीय स्तर तक बहाव किया जाना चाहिए ताकि सीमित स्रोतों पर बहाव कम हो सके।

(3)



प्रश्न  
संख्या

E

भूकंप एक प्राकृतिक आपदा घटना है जो पृथ्वी के अन्तर्गत बलों के कारण तबलों के विस्तार एवं संकुचन के परिणामस्वरूप उत्पन्न बल का कारण है। भारत में भूकंप सेवेद्वरीण क्षेत्र मुख्यतः उत्तर पूर्वी हिमालय पश्चिमी भारत, पूर्वी भारत आदि हैं। परन्तु वर्तमान में भूकंप की अनिश्चितता तथा क्षेत्रों में मौजूद हैं। इस अनिश्चितता एवं उत्पत्ति के कारण निम्नलिखित हैं :

1)

मानवीय कारण :  
 • सेवेद्वरीण क्षेत्रों में बाँध, धरमरचनात्मक गतिविधि का नि आपनाना  
 • इत क्षेत्रों में व्यापक मात्रा में तेल व गैस शोषण का कार्य करना।

2)

प्राकृतिक कारण :  
 • तबलों के विकर्णिकी लचकन का कारण  
 • ऊर्जा संचय का तनाव  
 • ऊर्जा का मुक्त होना  
 • हिमालय की तिकटना  
 • फॉल्ट एवं फगार क्षेत्र

वर्ष 2001 में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में आये भूकंप से लगभग 4 से 5000 लोगों की मृत्यु हो गई थी। वस्तुतः इसका मुख्य कारण

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्राकृतिक ही था। इस व्यापक भूकंप से पूर्व भारत  
में व्यापक नियंत्रण हेतु सिद्धी राष्ट्रीय नीति का  
अभाव था। इस प्राकृतिक आपदा के पश्चात  
ही 2005 में व्यापक नियंत्रण नीति का गठन  
किया गया जिसके तहत राज्य एवं जिला  
व्यापक नीति एवं आयोगों का गठन किया गया।

